P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-I*September-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

अनुसंधान के आईने में महादेवी वर्मा की शैक्षिक देन (एक मूल्याकंन)प्रथम दर्शन के आलोक में

आर. के. राय.
प्राचार्य
छुट्टनलाल काका पी0जी0 गर्ल्स कालेज
खत्रीवाड़ा, सिकन्द्राबाद,
बुलन्दशहर

सारांश

''क्या मैं कभी कल्पना कर सकता था कि जिस महादेवी की पुस्तकस्थ कविताओं, रेखाचित्रों, संस्मरणों का अध्ययन तथा जिनके दूर भाषणों का श्रवण किया है, उसी महाश्वेता महादेवी जी का साक्षात्कार एक शिक्षाशास्त्री के रूप में होगा ? यह असंभव था, किन्तु –

'' गुरू–गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरू आपनो, गोविन्द दियो बताय।।''

– की उक्ति सार्थक हुई। प्राची के पुलिन पृश्ठो पर हास की मुधर रेखा सहसा डर में स्पन्दन भर गई और 'प्रिय सांध्य–गगन मेरा जीवन' 19 जुलाई 1974 को 5 बजे सांध्य–गगन में उस आलोक से आलोकित हुआ जिसमें लय होने की अनन्त अभीप्सा थी।

मुख्य शब्द : शिक्षाशास्त्री, व्यक्तिमूलक एवं वृत्तिमूलक, छायावादी, रहस्यवादी

प्रस्तावना

कातर–हृदय की उदान अभिलाशाएँ साकार होकर अनागत भविष्य के उद्देश्य की प्राप्ति की। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में छायावादी काव्यधारा के चार स्तम्भों में एक प्रधान स्तम्भ थी, जिनकी कवयित्री के रूप में अपूर्व देन है। मैंने इस अपने अनुसंधान कार्य के द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि महादेवी जी हिन्दी कवयित्री के साथ एक उच्चकोटि की कुशल शिक्षाशास्त्री (Educationist) भी है। उनके साक्षात्कार एवं सोधकार्य के अवलोकन के पश्चात् एक शिक्षाशास्त्री के रूप में उनकी देन को हम यों प्रस्तुत रहें हैं।

महादेवी जी की शैक्षणिक विचारधारा का स्वरूप

प्राचीन भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में षिक्षा तथा भारतीय प्रशासनिककाल में शिक्षा का स्वरूप जो नैतिक आदर्श को लिए था, जिसमें जीवन के चार सत्यों–अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति के प्रयत्न रहें, किन्तु महोदवी जी ने उन आदर्शो को कायम रखते हुए वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था में संस्कृति को प्रश्रय देना है, ऐसा माना है।

1. महादेवी जी के प्रेरक तत्वों में शिक्षा को नवीन दिशा देने के प्रयत्न दृष्टिगत होते हैं। बाल्यावस्था से लेकर छात्र–जीवन की अनुभूतियों, राह में आने वाले पुरूष एवं महिलाओं के द्वारा जो जीवन की अनुभूतिक गहराई प्राप्त हुई, उनका विश्लेषण करते हुए शैक्षिक तत्वों का निर्माण कर सामाजिक विषमता को दूर करने का प्रयास किया।
2. महादेवी जी ने अपनी छायावादी, रहस्यवादी एवं सौन्दर्यपरक रचनाओं के आधार पर जीव–जगत ब्रह्म, आत्मा, माया, पराशक्ति को महत्वपूर्ण बतलाते हुए भारतीय दर्शन एवं संस्कृति की रक्षा हेतु शिक्षा को माध्यम बनाकर 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की स्थापना कर उसे एक नारी शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रमुख वृन्दावन बनाया, जिसमें साधक अपनी साधना द्वारा अनन्त जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सके। साथ ही उन्होंने सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् के प्राचीन आदर्श को भी आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मूर्त रूप देने का प्रयास किया है।
3. शिक्षा के दो तटों की उद्भावना–व्यक्तिमूलक एवं वृत्तिमूलक, करके उनकी व्याख्या करके मानवीय शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण किया है और यह
4. दर्शाने की कोशिश की है कि प्रत्येक बालक/बालिका शिक्षा से लाभ लेकर जीवन को उपयोगी बनावे।
5. सामाजिक उत्थान और विशेषकर नारी–समस्या का समाधान करने हेतु अनेक कदम उठाई। यथा–उनके लिए एक कुशल गृहिणी के रूप में 'गृहविज्ञान' की शिक्षा आत्म–विकास के लिए 'संगीत एवं नृत्य' की शिक्षा

तथा आत्म संतोश एवं अनुभूति के लिए 'चित्रकला' की शिक्षा पर विशेष बल दिया।

6. दर्शाने की कोशिश की है कि प्रत्येक बालक/बालिका शिक्षा से लाभ लेकर जीवन को उपयोगी बनावे।
7. सामाजिक उत्थान और विशेषकर नारी–समस्या का समाधान करने हेतु अनेक कदम उठाई। यथा–उनके लिए एक कुशल गृहिणी के रूप में 'गृहविज्ञान' की शिक्षा आत्म–विकास के लिए 'संगीत एवं नृत्य' की शिक्षा तथा आत्म संतोश एवं अनुभूति के लिए 'चित्रकला' की षिक्षा पर विषेश बल दिया।
8. भारतीय शिक्षा के वर्तमान पाठ्यक्रम को दूषित ठहराते हुए एक नवीन रचनात्मक (Creative) पाठ्यक्रम को जन्म दिया, जो महिला विद्यापीठ की अपनी विशेषता या देन है।
9. गाँधी जी के सहयोग से बेसिक शिक्षा–प्रणाली को स्वरूप देकर प्रत्येक बालक में आचरण 'नैतिक' उद्योग एवं समय का सदुपयोग करने व निर्माण करने वाली शिक्षा प्रणाली के विषय में अपने मंतव्य दिये।
10. प्रौढ़ या समाज–शिक्षा के लिए अनेकों प्रयास कर विभिन्न स्थानों में स्कूल खोलकर एक कुषल संचालिका के रूप में अपना अमूल्य योगदान देकर भारतीय समाज के नवोत्थान के लिए प्रेरणायें दीं।
11. अनुषासन की समस्याओं एवं छात्र तथा अध्यापक संबंधों की बिगड़ती दशा को देखकर वे संवेदनशील रहीं और बालकों की समस्याओं का समाधान कैसे होगा, इस पर उनकी खोजपूर्ण विचारणा यह रहीं कि अध्यापक चरित्रवान बनें। आज अध्यापकों ने अपने स्तर को गिरा दिया है, अपने कर्तव्य से दूर भागते नजर आ रहें हैं। यदि अपने को सुधार लें, बच्चों के मनोनुकूल विद्यालयों में पर्यावरण का निर्माण करें, तो अनशासन की समस्या का अन्त अपने आप हो जाएगा। उन्हें सही मार्गदर्शन देकर जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें।
12. अपनी रचनाओं के माध्यम से महादेवी जी ने राष्ट्रीय उद्बोधन को बढ़ावा दिया है और उनके अनुसार शिक्षा का तात्पर्य राष्ट्रीय सर्वांगीण विकास है न कि केवल परम्परागत शैक्षिक गतिविधियों के आधार पर एक लीक पर चलना ?
13. महादेवी जी द्वारा संचालित 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की तरह भारत में अनेक प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थाऐं काम कर रहीं हैं जिनकी स्थापना का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के तत्वों के आधार पर आदर्शवादी शिक्षा को व्यावहारिक रूप देना चाहती हैं। प्रकृति के पालने के बीच व्यावहारिक जीवन की सिद्धि को व्यक्त करता दिखाई देता है। यह भी तथ्य प्रकट होता है कि महोदवी जी आदर्शवाद, प्रकृतिवाद एवं व्यवहारवाद इन तीनों वादों के तत्वों से भी परिपूर्ण हैं।
14. महादेवी जी ने अपने शैक्षिक विचारों को जन्म देकर देष में फैली विषमताओं को दूर करने का प्रयास किया है, क्योंकि उनके अनुसार शिक्षा आदर्श की व्यवस्थापिका है, जिसने बालक/बालिकाओं को अपने को समझते हुए प्रकृति के साथ क्या तादात्म्य है–यह अनुभव करने की क्षमता विकसित होनी चाहिए।
15. एक आदर्श शिक्षिका, व्याख्याता एवं कुलपति के रूप में महादेवी जी हमारे समक्ष दृष्टव्य हैं। उनकी तुलना रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, प0 मदन मोहन मालवीय, डा0 ऐनीबेसेन्ट, दयानन्द सरस्वती, आचार्य विनोबा भावे और पाश्यात्य शिक्षाशास्त्री रूसो, फ्रोबेल, सुकरात, प्लेटो आदि से भी की जा सकती है। क्योंकि उनकी रचनाओं में इन्हीं सांकेतिकता का शैक्षिक समाहार है। जीवन की गहराई है।
16. महादेवी जी के शैक्षिक–विचारों पर बुद्धिवादी षिक्षा का भी प्रभाव है–जिसमें जीवन है, जरा है और मरण है। इन सांसारिक बाधाओं से दूर हटने के लिए जीवन में मध्यम मार्ग का अवलंबन करना है–जो व्यवहारपूर्ण व मानवीय है।
17. प्रत्येक जड़ एवं चेतन पदार्थ शिक्षा के तत्व हैं, षिक्षा के विषय है, शिक्षा के अभिकरण हैं एवं षिक्षा की व्याख्या है। इसी आधार पर महादेवी जी भी आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा को स्वीकारा है।
18. इनको साकार रूप देने के लिए महादेवी जी को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। स्थान–स्थान पर, गांव–गांव में भ्रमण कर प्रत्येक स्त्री/पुरूष की समस्याओं को समझते हुए विद्यालयों की स्थापना करना, उनके अनुकूल पाठ्यक्रम का आयोजन कर लागू करना, शिक्षा केन्द्र की समस्याओं का समाधान, उनके जीवन की शैक्षिक देन है। साथ ही प्रौढ़–शिक्षा और निरक्षरता उन्मूलन का अपना अखण्ड प्रयास है।
19. शिक्षा के द्वारा प्रत्येक स्त्री–पुरूष में विश्व मानव के प्रति प्रेम जागृत करना, प्रकृति के प्रत्येक उपादान की उपयोगिता पर प्रकाश डालकर उनके प्रमुख शैक्षिक महत्व को बताना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है।
20. शिक्षा में क्रियात्मक–अनुसंधान (Action Research) और सर्वेक्षय (Education Survery) को प्रश्रय देकर बालक की शिक्षा में संरचनात्मक प्रवृत्ति (Creative Attitude) के विकास हेतु उन्होंने अनेकों प्रयास किये है। यथा–बालकों को खेल–कूद की व्यावहारिक षिक्षा दी जाय। उनमें 'करके सीखने' (Learning by doing) की भावना भरना और इनके साथ ही अनुकरण (Learning by Imitation) को प्रमुख अंग माना।

उपर्युक्त सिंहावलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय शिक्षा–क्षितिज पर महादेवी जी एक देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में अवतरित हुई और एक जाज्वल्यमान प्रकाश–स्तम्भ के रूप में आज भी शिक्षा जगत के जिज्ञासुओं का समुचित मार्गदर्शन कर रही हैं। हमारा विश्वास है कि उनके मार्ग पर चलकर भारतीय शिक्षा अपनी प्राचीन गौरव–गरिमा को पुनः प्राप्त कर सकेगी। जिसमें चरित्र बल है, अध्यात्मभाव है, मानवीय भाव है, राष्ट्रीय सद्भाव है, विश्व बंधुत्व है, सृजनात्मक जीवन की पहल है और हैं सम्पूर्ण भारतीयता का सर्वांगीण विकास।

संदर्भ–ग्रंथ

1. महादेवी वर्मा–साहित्य – काव्य, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी और गद्य–साहित्य।
2. शिक्षा के आधार – डा0 गुरूशरनदास त्यागी
3. शिक्षा का इतिहास – डा0 एस0 एन0 षर्मा
4. विश्व के महान शिक्षा–शास्त्री – डा0 रामशकल पाण्डेय
5. महान शिक्षा–शास्त्री – डा0 सीताराम जायसवाल
6. भारतीय संस्कृति – महादेवी वर्मा
7. प्राचीन भारतीय शिक्षा – डा0 आर0 के0 मुखर्जी
8. प्राचीन भारतीय शिक्षा – डा0 सदाशिव अल्टेकर
9. भारतीय शिक्षा की समस्याऐं – डा0 गुरूशरनदास त्यागी
10. महादेवी के शिक्षा–सम्बधी भाषण